International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 7 Issue – 1 January-June 2019
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

जयपुर जिले की शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग का वर्तमान स्वरूप

डॉ. गौरव कुमार जैन[1], शारदा चौधरी[2]
[1]सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर
[2]शोधार्थी भूगोल विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

सारांश

मानव प्रारम्भिक काल से ही भूमि उपयोग करता आ रहा है। जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ भूमि उपयोग में परिवर्तन होने लगा। जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकतानुसार कर रहा है तो उस भू–भाग के लिये भूमि उपयोग शब्द का प्रयोग होगा अर्थात् भूमि उपयोग में भू–भाग का प्राकृतिक स्वरूप क्षीण हो जाता है। तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है, तभी इसे भूमि उपयोग की संज्ञा देते हैं। षोध का अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील है, जो राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। शाहपुरा तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 3,26,488 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण शाहपुरा तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। शाहपुरा तहसील के पष्चिमी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। शाहपुरा कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। मध्यवर्ती भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धषुष्क जलवायु दषाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि कारणों ने तहसील की जनसंख्या को प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देष्य शाहपुरा तहसील की वर्तमान भूमि उपयोग प्रतिरूप का विष्लेषण करना है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संकलन कर आरेखन एवं आलेखन विधि तंत्र की सहायता ली गई है। किसी क्षेत्र विषेष के सन्तुलित विकास के लिये जल–जंगल–जमीन का सन्तुलित होना आवष्यक है। शाहपुरा तहसील में कुल भू–क्षेत्र 53096 हैक्टेयर है जिसका विविध कार्यों, जैसे– जंगलात, कृषि के अतिरिक्त अन्य काम में ली गई भूमि, ऊसर तथा कृषि अयोग्य भूमि तथा कृषि भूमि के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

संकेत शब्द– *भूमि उपयोग, उच्चावच, जलवायु, आर्थिक संसाधन, सामाजिक–सांस्कृतिक, अर्द्धषुष्क जलवायु।*

परिचय :

जयुपर जिले की शाहपुरा तहसील राजस्थान के भौतिक विभाग पूर्वी मैदानी के उपार्द्र जलवायु खण्ड में स्थित है। यह स्थलाकृति सतही जलप्रवाह कम, समतल मैदान तथा भूमि मृदा के आवरण से यृक्त है। शाहपुरा तहसील की समुद्र तल से औसत ऊॅचाई 500 से 900 मीटर है। यह (षाहपुरा) अक्षांषीय विस्तार 27^0 37′ से 27^0 38′ उत्तरी अक्षांष तथा देषान्तरीय विस्तार 75^0 94′ से 75^0 95′ पूर्वी देषान्तर के मध्य है। शाहपुरा तहसील राजस्थान के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले के उत्तर पूर्व में स्थित है। यह तहसील पष्चिम में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिलों की सीमा का निर्धारण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील शाहपुरा तहसील के पष्चिम में स्थित है। तहसील के उत्तर–पूर्व में जयपुर जिले की विराटनगर तहसील स्थित है। तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में आमेर तहसील स्थित है तथा उत्तरी भाग में कोटपूतली तहसील स्थित है। इस प्रकार जयपुर जिले की शाहपुरा तहसील की स्थिति अपना विषिष्ट स्थान रखती है। शाहपुरा तहसील का क्षेत्रफल 530.96 वर्ग किलोमीटर है, जो कि राजस्थान के कुल क्षेत्रफल (3,42,239 वर्ग किलोमीटर) का 0.15 प्रतिषत है तथा जिले का 9.16 प्रतिषत क्षेत्रफल है। शाहपुरा तहसील में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 226201 थी जिसमें 52.6 प्रतिषत पुरूष एवं 47.4 प्रतिषत महिलाऐं तथा 2011 में जनसंख्या 272632 हो गयी है, जिसमें 52.6 प्रतिषत पुरूष एवं 47.4 प्रतिषत महिलाओं की भागीदारी है। इस जनसंख्या का वितरण शाहपुरा तहसील

के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं।

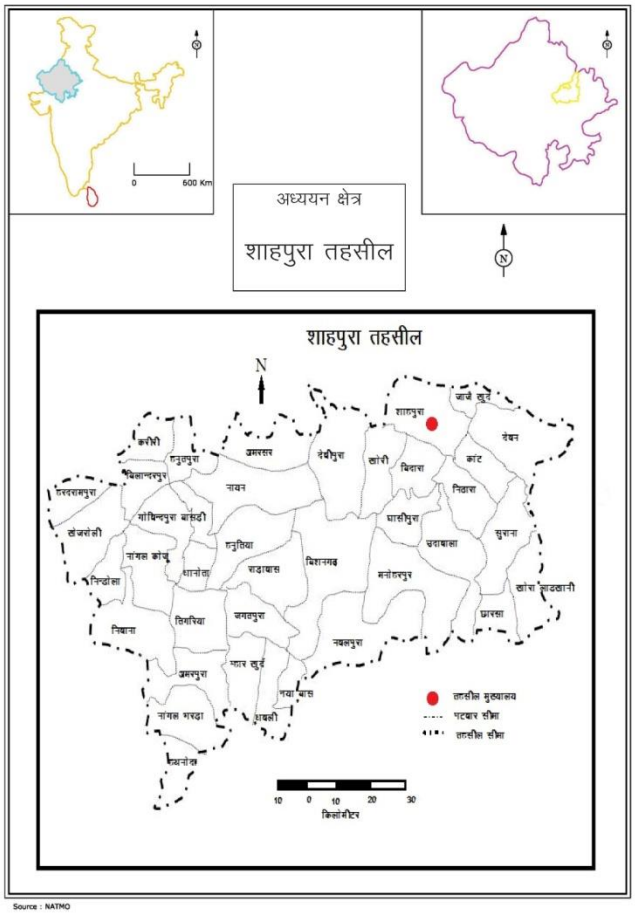

चित्र 1 : अध्ययन क्षेत्र अवस्थिति

अध्ययन क्षेत्र का अधिकांष भाग उपोष्ण प्रदेष है। जिसमें जल का अभाव है। फलस्वरूप सिंचाई साधनों का अधिकतम उपयोग कृषि के विकास हेतु पानी उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार सतत प्रयास कर रही है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र में कृषि हेतु भूमि उपयोग बढ़ता जा रहा है।

प्रकृति का स्वरूप परिवर्तनशील है, वर्तमान में स्थित भूमि और मानवीय संसाधन अति महत्त्वपूर्ण हिस्से है। मानव के समस्त क्रियाकलाप भूमि पर आधारित है और कृषि भूमि पर अन्य संसाधन निर्भर होते है। अन्न, रस, जल, फल, और फूल जो कि मानव की आवश्यकताओं के मुख्य घटक है सभी कृषि भूमि पर निर्भर है, अतः कृषि भूमि मानवीय विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी है। कृषि भूमि उपयोग प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण की अन्तःक्रिया से बनती है। कृषि भूमि मानव जीवन का आधार है, विगत वर्षो में जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि भूमि का अत्यधिक दोहन किया गया है। आधुनिक जीवन शैली के कारण कृषि भूमि का अत्यधिक दोहन किया गया है। आधुनिक जीवन शैली के कारण कृषि भूमि का अधिकतम उपयोग किया गया है फलस्वरूप कृषि भूमि की गुणवत्ता में अत्यन्त कमी हुई है और उर्वरा शक्ति में ह्रास हुआ है। जिस भूमि पर मानव अपने अथक प्रयासों से फसल उत्पन्न करता है उस भूमि को कृषि भूमि कहते है।

भारत में कृषि भूमि संसाधन, जल संसाधन तथा मानव संसाधन पर्याप्त होते हुए भी उचित प्रबंधन व नियोजन के अभाव के कारण अनेक समस्याएं दृष्टिगोचर होती है। सम्प्रति मानव व कृषि भूमि अनुपात बदलता जा रहा है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि अत्यंन्त तीव्र गति से बढ़ रही है जबकि संसाधन कम होते जा रहे है, अतः वर्तमान समय में कृषि भूमि का बदलता प्रतिरूप शोध का सर्वोच्च विषय हो सकता है।

भूमि उपयोग का सर्वप्रथम अध्ययन ओ. ई. बेकर (1927) में किया। प्रो. स्टाम्प ने 1937 में ब्रिटेन के भूमि उपयोग का वर्गीकरण प्रस्तुत कर समाज के लिए श्रेयस्कर कार्य किया, इसी को आधार बनाकर आज सूक्ष्म व गहन अध्ययन उत्तरोत्तर प्रस्तुत किया जा रहा है।

भूमि उपयोग विश्लेषण कृषि सांख्यिकी तकनीकी कमेटी ने खाद्य एवं कृषि मंत्रालय के सहयोग से विकसित भूमि उपयोग को 9 भागों में विभक्त किया है। यह वर्गीकरण मुख्य रूप से क्षेत्र विशेष में विद्यमान कृषि योग्य भूमि, चारागाह, वन आदि के आधार पर वास्तविक उपयोग दिखाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत भूमि उपयोग श्रेणियों का निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है।

1. वनभूमि
2. कृषि अयोग्य भूमि
3. चारागाह भूमि
4. वृक्षों के झुण्ड
5. कृषि योग्य बंजर भूमि
6. पड़त भूमि
7. वास्तविक बोयी गई भूमि
8. समस्त बोयी गई भूमि
9. एक बार से अधिक बोयी गई भूमि ।

सारणी संख्या 1

शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग प्रतिरूप वर्ष 2006–07 एवं वर्ष 2014–15 **(हैक्टेयर में)**

क्र.सं.	वर्ष	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	वन क्षेत्र	अकृषित भूमि का क्षेत्रफल	स्थाई चरागाह एवं गोचर भूमि वृक्षों के समूह एवं बाग	कृषि योग्य बंजर भूमि	पड़ती भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल
1.	2006–07	53096	7996	6228	4251	1167	5145	28309	20643
2.	2014–15	53096	8047	5672	4124	813	4553	29290	28411
भूमि उपयोग प्रतिषत में									
1.	2006–07	100	15⁰06	11⁰73	8⁰01	2⁰20	9⁰69	53⁰32	38⁰88
2.	2014–15	100	15⁰16	10⁰68	7⁰77	1⁰53	8⁰58	55⁰16	53⁰51
	परिवर्तन	संख्या में	51	.556	.127	.354	.592	981	7768
		प्रतिशत में	0⁰10	.1⁰05	.0⁰24	.0⁰67	.1⁰11	1⁰85	14⁰63

स्रोतः कार्यालय जिला कलक्टर भू.अ. जयपुर, 2001, 2011

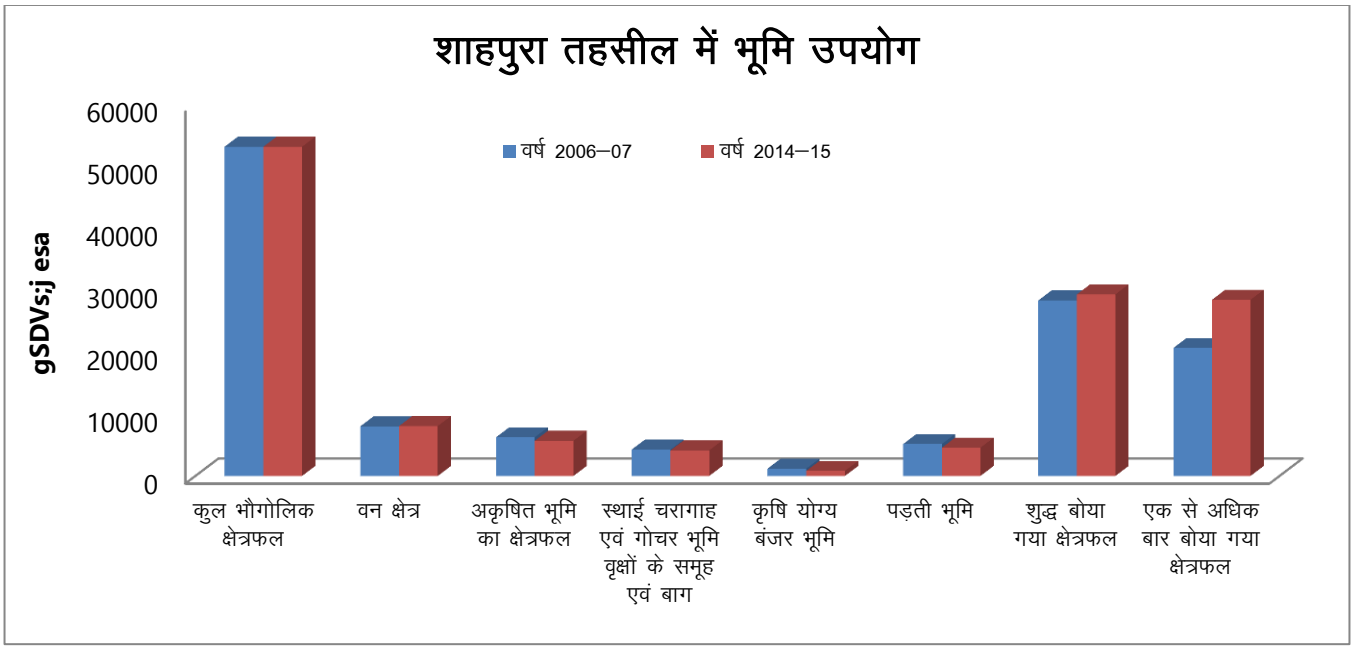

आरेख 1: शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग

देष में वर्ष 1948 में ही कृषि मंत्रालय के अधीन आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग स्थापित किया गया। अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में वन क्षेत्र 15.06 प्रतिषत, अकृषित भूमि 11.73 प्रतिषत, स्थाई चरागाह 8.01 प्रतिषत, बंजर भूमि 2.20 प्रतिषत, पड़ती भूमि 9.96 प्रतिषत, शुद्ध बोया गया क्षेत्र 53.32 प्रतिषत तथा एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र 38.88 प्रतिषत था, जो वर्ष 2014–15 में वन क्षेत्र 15.16 प्रतिषत, अकृषित भूमि 10.68 प्रतिषत हो गया।

सारणी संख्या 2
शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग श्रेणी में परिवर्तन
(वर्ष 2006–07 एवं 2014–15)

(प्रतिषत में)

क्र.सं.	भूमि श्रेणी	वर्ष 2006–07	वर्ष 2014–15
1.	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	100	100
2.	वन क्षेत्र	15ण्06	15ण्16
3.	अकृषित भूमि का क्षेत्रफल	11ण्73	10ण्68
4.	स्थाई चरागाह एवं गोचर भूमि वृक्षों के समूह एवं बाग	8ण्01	7ण्77
5.	कृषि योग्य बंजर भूमि	2ण्20	1ण्53
6.	पड़ती भूमि	9ण्69	8ण्58
7.	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	53ण्32	55ण्16
8.	एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल	38ण्88	53ण्51

स्रोतः जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर, वर्ष 2001, 2011

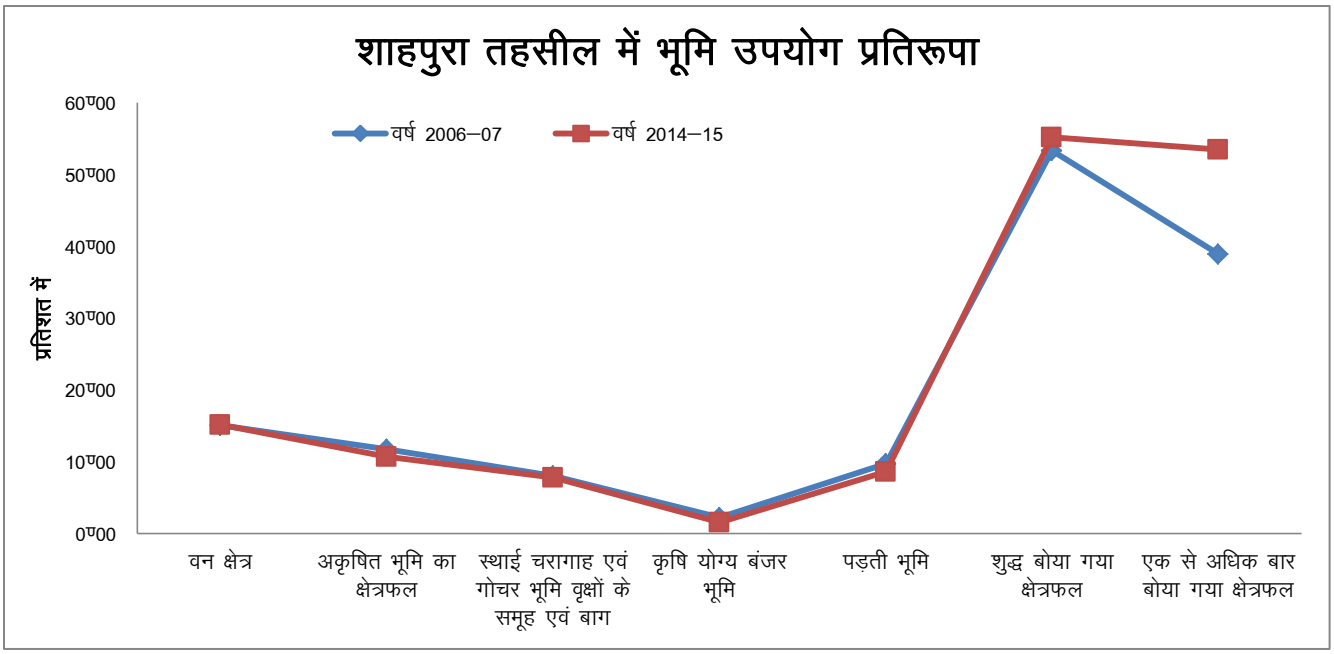

आरेख 2 : शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग प्रतिषत में

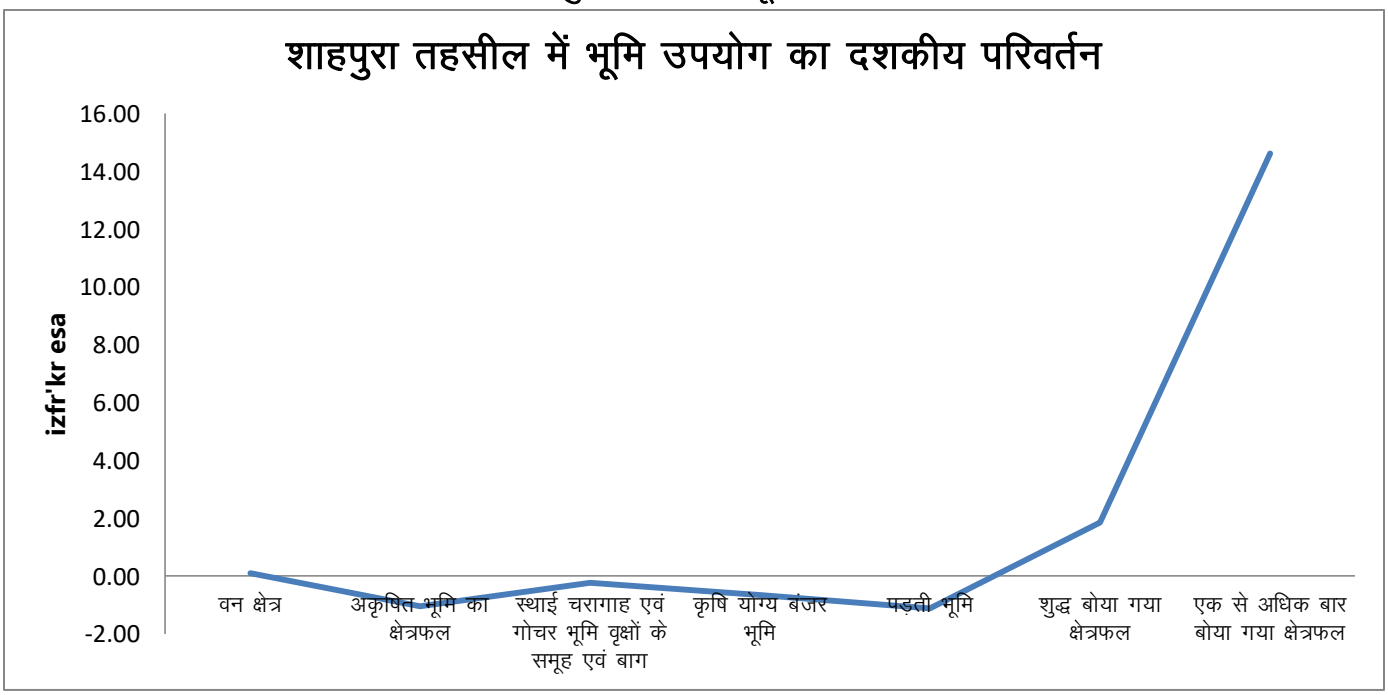

आरेख 3 : शाहपुरा तहसील में भूमि उपयोग का दषकीय परिवर्तन

इस दषक में एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल में काफी वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्यान्न की आवष्यकता की पूर्ति के लिए क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है।

वन क्षेत्रः–

देश के बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों में वनों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वनों का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में विषेष महत्व है। राष्ट्रीय वन नीति 1952 के अनुसार किसी प्रदेष में पर्यावरण की सुरक्षा व संरक्षण के लिए उस प्रदेष के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 33 प्रतिषत भू भाग पर प्राकृतिक वनस्पति का आवरण होना अत्यंत आवष्यक है। भू–संरक्षण, जल संरक्षण, मरूस्थल और बाढ़ के लिए एवं देष के औद्योगिक और कृषि विकास के लिए वनों का उचित परिमाण में होना आवष्यक है। अतः प्राकृतिक वनस्पति को संतुलित प्रक्रिया में बनाए रखने के लिए आवष्यक है कि पर्यावरण संतुलन बना रहे। वर्ष 1991 में राजस्थान में कुल भौगोलिक क्षेत्र के 6.87 प्रतिषत भू–भाग पर वनों का विस्तार था। जो वर्ष 2001 में बढ़कर 7.60 प्रतिषत भू भाग पर वनों का विस्तार हो गया। वर्ष 2004 में बढ़कर 7.70 प्रतिषत हो गया। इस प्रकार पिछले दो दषकों में वनों के क्षेत्र में 0.83 प्रतिषत वृद्धि की गई।

वर्ष 2002–03 में जयपुर जिले में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के केवल 7.38 प्रतिषत भू–भाग पर वनों का विस्तार था, जो वर्ष 2007–08 में घटकर 7.36 प्रतिषत (81418 हैक्टेयर) हो गया। वर्ष 2014–15 में बढ़कर में 82766 हैक्टेयर हो गया जो जिले के कुल क्षेत्रफल का 7.48 प्रतिषत है।

अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वनों का विस्तार वर्ष 2006–07 में 7996 हैक्टेयर 15.06 प्रतिषत था। जो वर्ष 2014–15 में बढ़कर 8047 हैक्टेयर (15.16 प्रतिषत) हो गया। इस प्रकार शाहपुरां तहसील में पिछले दषक में वन क्षेत्र में 0.10 प्रतिषत क्षेत्रफल की वृद्धि हुई।

वन क्षेत्र में वृद्धि जन चेतना व सरकार के समन्वित प्रयासों से हुई है। इसके अलावा यहां वन सुरक्षा, ईंधन एवं चारा योजना, पर्यावरण वृक्षारोपण, आर्थिक वृक्षारोपण, अनुसंधान एवं प्रषिक्षण सामाजिक वानिकी विकास परियोजना आदि के कारण सिंचाई क्षेत्र में विस्तार के साथ–साथ निरंतर वन भूमि क्षेत्र में भी अधिक विकास हुआ है।

अकृषिगत भूमिः

अकृषिगत भूमि का उपयोग आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उद्देष्यों के लिए किया जाता है। जैसे अधिवास, परिवहन साधन, उद्योग, बाजार एवं सांस्कृतिक साधनों हेतु किया जाता है। इस प्रकार लगातार जनसंख्या वृद्धि के कारण आवास निर्माण नगरों का विस्तार वनों का विस्तार एवं चरागाहों के विस्तार के कारण अकृषिगत भूमि का क्षेत्रफल बढ़ रहा है।

अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में अकृषिगत भूमि का क्षेत्रफल 6228 हैक्टेयर (11.73 प्रतिषत) था। वहीं वर्ष 2014–15 में अकृषिगत भूमि का क्षेत्रफल घटकर 5672 हैक्टेयर 10.68 प्रतिषत हो गया। अध्ययन क्षेत्र में अकृषिगत क्षेत्रफल में कमी इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि निरंतर जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप बढ़ती मांग के कारण भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है, जिससे कृषि कार्यों के अतिरिक्त भी भूमि उपयोग में वृद्धि हो रही है।

स्थाई चरागाह व गोचर भूमिः

राजस्थान राज्य में कृषि कार्यों के साथ साथ पशुपालन एक प्रमुख उद्यम है। आर्थिक विकास में पशुपालन का भी महत्वूपर्ण स्थान है। अतः भूमि उपयोग की इस श्रेणी का सबसे अधिक महत्व पशुधन के संरक्षण की दृष्टि से है।

अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में स्थाई चरागाह व गोचर भूमि का क्षेत्रफल 4251 हैक्टेयर 8.01 प्रतिषत, जो वर्ष 2014–15 में घटकर 4124 हैक्टेयर (7.77 प्रतिषत) हो गया। सन् 2014–15 में वर्ष 2006–07 की तुलना में स्थाई चरागाह तथा गोचर भूमि का क्षेत्रफल घटा है। इसका मुख्य कारण अध्ययन क्षेत्र में स्थाई चारागाहों एवं गोचर भूमि का सरकारी आवंटन रहा है, जिसके कारण चरागाह में कमी आ रही है।

कृषि योग्य बंजर भूमिः

वर्तमान में वह भूमि जिस पर कृषि कार्य नहीं किया जा रहा है। भविष्य में इस भूमि पर कृषि कार्य किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2006–07 में 1167 हैक्टेयर (2.20 प्रतिषत), जो वर्ष 2014–15 में में घटकर 813 हैक्टेयर 1.53 प्रतिषत हो गई। अध्ययन क्षेत्र में कृषि योग्य बंजर भूमि का विस्तार वर्ष 2006–07 की तुलना में घटा है। इसका कारण बढ़ती जनसंख्या का दबाव है तथा कृषि योग्य बंजर भूमि के अंतर्गत रेह, भूर, ऊसर आदि भू भाग आता है। इस प्रकार की भूमि में मृदा आवष्यक तत्वों की कमी के कारण कृषि कार्यों के उपयोग में नहीं ली जा रही है तथा विनिर्माण क्षेत्र में ऐसी भूमी को अधिक उपयोग में लिया जा रहा है। अतः ऐसी भूमि कृषि योग्य बंजर भूमि कहलाती है।उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि योग्य बंजर भूमि में कमी हो रही है, निरन्तर इनका उपयोग बढ़ रहा है।

पड़ती भूमिः

पड़ती भूमि में दो प्रकार की भूमि को शामिल किया जाता है। प्रथम प्रकार की चालू पड़ती भूमि (एक वर्षीय पड़त भूमि जिस पर एक वर्ष के लिए बिना जुताई के खाली छोड़ दी जाती है।) द्वितीय प्रकार की पड़त भूमि (एक वर्ष से पांच वर्ष तक जुताई नहीं की जाती है) को शामिल किया जाता है। राजस्थान राज्य में धीरे धीरे निरंतर सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप पड़त भूमि के क्षेत्रफल में निरंतर कमी होती जा रही है। अतः इस भूमि उपयोग की श्रेणी का रूपांतरण कृषि कार्यों के उपयोग के लिए निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस क्षेत्र में लगातार सिंचाई की सुविधाओं व वन ह्रास के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो रही है। अतः उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए भूमि को पड़ती रखना आवष्यक है।

अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में पड़त भूमि का क्षेत्रफल 5145 हैक्टेयर 9.69 प्रतिषत थी, जो वर्ष 2014–15 में घटकर 4553 हैक्टेयर (8.58 प्रतिषत) हो गया। इसका प्रमुख कारण है कि यहाँ जल स्तर में गिरावट के कारण भूमि में कृषि नहीं की जा रही है तथा इस भूमि को अन्य कार्यों में उपयोग लिया जाने लगा है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रः

शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र के 28309 हैक्टेयर (53.32 प्रतिषत) भाग के अंतर्गत था तथा 2014–15 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र बढ़कर 29290 हैक्टेयर (55.16 प्रतिषत) हो गया। वर्ष 2006–07 की तुलना में वर्ष 2014–15 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र कुल मिलाकर बढ़ा है। इसका कारण वर्षा का पर्याप्त मात्रा में होना, सिंचाई सुविधाओं का विकास होना तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषित भूमि को कृषि सम्बंधी गतिविधियों में उपयोग लेना है।

भूमि उपयोग के उपर्युक्त स्थानिक सामयिक वितरण प्रतिरूप के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि शुद्ध बोये गए क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में शुद्ध बोये गए भू भाग के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप में अत्यधिक विभिन्नताएं देखने को मिलती है, इसी प्रकार उपोष्ण भू भाग में इस भूमि उपयोग श्रेणी में वृद्धि का कारण सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से बंजर और बिना बोई कृषि भूमि का उपयोग में लाया जाना रहा है। भविष्य में जनसंख्या वृद्धि के साथ साथ शुद्ध बोये गए क्षेत्र में वृद्धि बहुत कठिन है। अतः अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में जीवन की गुणवत्ता के लिए समयबद्ध योजना के तहत मानवीय संसाधनों की वृद्धि पर अंकुष हेतु व्यवहारिक व कारगर उपायों का क्रियान्वयन अपरिहार्य है। उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि पिछले दषक की तुलना में वर्तमान में शुद्ध बोये गए क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्रः

जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ कृषि संसाधनों की मांग को पूरा करने के लिए भूमि उपयोग पर निरंतर दबाव बढ़ रहा है। इस प्रकार बोये गए क्षेत्र में एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र मे निरंतर वृद्धि हो रही है। तहसील में निरंतर सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि के कारण एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र में वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्धता से तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण फसल प्रतिरूप व भूमि उपयोग में परिवर्तन आ रहा है। परम्परागत फसलों की अपेक्षा नकदी फसलों के प्रति रूझान बढ़ा है। इस प्रकार भूमि उपयोग की श्रेणी में परिवर्तन देखने को मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में वर्ष 2006–07 में एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र 20643 हैक्टेयर (38.88 प्रतिषत), जो वर्ष 2014–15 में बढ़कर क्षेत्र 28411 हैक्टेयर (53.51 प्रतिषत) हो गया। इस अवधि में अध्ययन क्षेत्र में शुष्क कृषि प्रणाली से सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण अचानक इतनी अधिक वृद्धि हुई है। साथ ही इस अवधि में सिंचाई सुविधाओं के कारण ही एक से अधिक फसले होने लगी है। पहले वर्षा पर आश्रित कृषि भूमि में वर्ष में एक ही फसल का उत्पादन होता था। अब सिंचाई सुविधाओं के कारण कृषि भूमि पर एक से अधिक फसलों का उत्पादन किया जाता है। वर्तमान समय में बढ़ती जनसंख्या के भरण पोषण के लिए भी आवष्यक है कि वर्ष में कम से कम दो फसलों का उत्पादन किया जाए।

निष्कर्ष:

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकों में भौतिक कारक मुख्य है। यहां की जलवायु शुष्क है, जिससे कृषि भूमि उपयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा अध्ययन क्षेत्र का उच्चावचीय स्वरूप भी असमान तथा असमतल है। अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का ढांचा भी भूमि उपयोग को प्रभावित करता है। भू स्वामित्व के रूप में किसानों की आपसी होड के कारण समाज वर्गो में विभाजित होता नजर आ रहा है।

पिछले तीन दषकों के भूमि उपयोग के स्थानिक–सामयिक प्रतिरूप विष्लेषण अत्यधिक परिवर्तन को इंगित करता है। इस अवधि के दौरान राजस्थान राज्य में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप निरंतर बढ़ती जनसंख्या की मांगों में वृद्धि के कारण वन क्षेत्र, शुद्ध बोये गए क्षेत्र तथा एक से अधिक बार बोया क्षेत्र निरंतर बढ़ा है। जिसका परिणाम यह हुआ कि राज्य में ऊसर भूमि, कृषि योग्य बंजर भूमि तथा पड़त भूमि में निरंतर कमी अंकित की जा रही है। इन तीनों श्रेणी की भूमि उपयोग कृषि संसाधनों में वृद्धि हेतु किया जा रहा है। राज्य की भांति अध्ययन क्षेत्र शाहपुरा तहसील में भी इन दषकों में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार बढ़ती जनसंख्या की दिन प्रतिदिन बढ़ती मांगों की आपूर्ति हेतु शुद्ध बोया गया क्षेत्र 55.16 प्रतिषत, एक बार से अधिक बार बोया क्षेत्र 53.51 प्रतिषत तथा वन भूमि क्षेत्र 15.16 प्रतिषत अंकित की गई। एक से अधिक बोया गया क्षेत्र में अचानक काफी वृद्धि हुई इसका मुख्य कारण अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होना तथा अकृषित भूमि में कमी अंकित की गई है। चूंकि अध्ययन क्षेत्र में संसाधन सीमित है अतः उपलब्ध संसाधनों, विषेष रूप से भूमि व जल संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग किया जा रहा है। इसके साथ साथ भविष्य में बढ़ती जनसंख्या की मांगों की पूर्ति प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का समयबद्ध योजना के तहत अनुकूलतम प्रबंधन की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथः

1. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर (2008) : आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेषालय, राजस्थान, जयपुर
2. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर (2015) : आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेषालय, राजस्थान, जयपुर
3. डॉ. कुमार, प्रमिला एवं डॉ. शर्मा, श्रीकमल (1996) कृषि भूगोल, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 318
4. शफी, एम. (2006) : एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, पब्लिष्ड बाय डालिंग किंडर्सले इंडिया प्रा. लि. दिल्ली
5. सिंह बी.बी. 1971: लैण्डयूज एफीषिएंसी स्टेज एण्ड ऑप्टीमय लैण्डयूज, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, गोरखपुर
6. सिंह, जे. एण्ड ढिल्लो, एस.एस (1984) एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, टाटा मैक्ग्रा हिल पब्लिषिंग कंपनी लि. नई दिल्ली
7. हुसैन, एम. (1979) : एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, इंटर इंडिया पब्लिकेषन्स दिल्ली।
8. डॉ. कुमार, प्रमिला एवं डॉ. शर्मा, श्रीकमल (1996) कृषि भूगोल, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल पृ. 320
9. डॉ. भल्ला, एल. आर (2003): राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिषिंग हाउस, जयपुर पृ. 68
10. कार्यालय, जिला कलक्टर, भू. अ., जयपुर